09. ब्रह्माण सम्राज्य (Brahmin Empire)

शुंग वंश (185-73 BC)

- मगध पर शासन करने वाला यह पहला गैर क्षेत्रीय राजवंश था।
- इस वंश के संस्थापक पुष्यमित्र शुंग थे।
- इन्होंने अपनी राजधानी पाटलीपुत्र बनाई जबकि द्वितीय राजधानी विदिशा को बनाया। विदिशा का पुराना नाम बेसनगर (MP) था।
- पुष्यमित्र शुंग एक कट्टर ब्राह्मण था। यह 36 वर्षों तक शासन किया। जबकि इस वंश का शासन 112 वर्षों तक चला।
- भारत में पुन: वैदिक धर्म की स्थापना करने का श्रेय पुष्यमित्र शुंग को जाता है।
- पुष्यमित्र शुंग को बौद्ध धर्म का विरोधी शासक माना जाता है। इसका प्रमाण दिव्यावदान से प्राप्त होता है। हालांकि इनके काल में कई बौद्ध विहार का भी निर्माण हुआ।
- इसने बहुत सारे बौद्ध स्तूपों तथा मठों को ध्वस्त करा दिया।
- पुष्यमित्र शुंग ने मध्यप्रदेश के साँची स्तूप की खिड़कियों को तांबे का कराया जबकि भरहुत (MP) स्तूप की खिड़कियों को पत्थर का करवाया।
- पुष्यमित्र शुंग के काल में अशोक द्वारा निर्मित सांची एवं भरहुत स्तूप का आकार दुगुना करवाया गया था। वर्तमान में सांची के स्तूप का जो स्वरूप है वह पुष्यमित्र शुंग के काल का ही देन है।
- बौद्ध चैत्य भवन का निर्माण इसी वंश के समय हुआ था।
- इसके समय बौद्ध पुस्तक जातक ग्रंथ की रचना हुई।
- पाणिनी ने अष्टाध्यायी (व्याकरण ग्रंथ) लिखा।
- मनु ने मनुस्मृति लिखा। गर्गी ने गर्गीसंहिता लिखा।
- जिनसेन ने हरीवंश की रचना किया।

➢ **इनके काल में कुल मिलाकर दो युद्ध किए गए थे–**

1. विदर्भ का युद्ध
2. यवन आक्रमणकारी का युद्ध

- विदर्भ (बरार) में चल रहे उत्तराधिकारी के युद्ध का लाभ उठाकर पुष्यमित्र शुंग ने अग्निमित्र के नेतृत्व में सेना भेजा। जिसमें अग्निमित्र विजयी हुए थे। इसकी जानकारी कालीदास की रचना मालविकाग्निमित्र से मिलती है।

  Note :– कालीदास की पुस्तक **मालविकाग्निमित्र** में **अग्निमित्र** एवं **मालविका** का प्रेम-प्रसंग की चर्चा है।

- इसके समय दो यमन विदेशी आक्रमण हुए। दोनों ही यमन आक्रमण को पुष्यमित्र शुंग ने अपने बेटे अग्निमित्र द्वारा विफल कर दिया।
- इन दोनों ही आक्रमण के समय पुष्यमित्र शुंग विजय हुए और इस अवसर पर पुष्यमित्र शुंग ने पतंजलि के नेतृत्व में दो अश्वमेघ यज्ञ करवाया एवं अपने राजधानी पाटलीपुत्र स्थानांतरित करके विदिशा को बनाया।
- पहले आक्रमण का नेतृत्व डेमेट्रियस ने किया।
- दूसरे आक्रमण का नेतृत्व मिणाण्डर (मिलिंद) ने किया।
- मिलिंद (मिणाण्डर) को बौद्ध भिक्षुक नागसेन ने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी जिससे उसने बौद्ध धर्म अपना लिया।
- कलिंग नरेश खारवेल ने पुष्यमित्र शुंग को पराजित कर दिया था।
- इस वंश में कुल 10 शासक थे। पहला शासक पुष्यमित्र शुंग, नौवां शासक भागभद्र एवं दशवां शासक देवभूति थे।
- इस वंश के शासक भाग्यभ्रद के दरबार में यवन (विदेशी) राजदूत हेलियोडोटस आया था। जो भागवद् धर्म अपना लिया।
- इसने भगवान विष्णु के सम्मान में विदिशा या वेसनगर (मध्यप्रदेश) में गरूड़ध्वज अभिलेख का निर्माण कराया था। उसने उसपर भगवान विष्णु के लिए देवदेवश्य शब्द का प्रयोग किया।
- शुंग राजवंश का शिलालेख जालंधर (पंजाब) से मिलता है।
- इस काल में संस्कृत भाषा का सर्वाधिक विकास हुआ।
- शुंग वंश के काल की अर्थव्यवस्था जातक ग्रंथ एवं मिलिन्दपन्हो नामक पुस्तक से मिलता है।
- इस वंश के 10वें एवं अंतिम शासक देवभूति थे जिनकी हत्या उन्हीं के मंत्री वासुदेव ने कर दी और इसके स्थान पर कण्णव वंश की स्थापना कर दी।

कण्णव वंश (73-30 BC)

- इस वंश के संस्थापक वासुदेव थे। इन्होंने अपनी राजधानी विदीशा को बनाया।

➢ **इस वंश में कुल 4 शासक हुए–**

(1) वासुदेव, (2) भूमिपुत्र, (3) तरायण एवं (4) सुशर्मा।

- इस वंश का दूसरा नाम कणवायांग था।
- यह वंश 43 वर्षों तक शासन किया।
- कण्णव राजा को पुराण में शुंग मित्र के नाम से पुकारा जाता था।
- कण्णव साम्राज्य पर पहला आक्रमण शक का हुआ। ये ब्राह्मण जाति के थे।
- इस वंश में सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला शासक भूमिपुत्र था जो 14 वर्ष तक शासन किया।

- इस वंश का अयोग्य एवं दुर्बल अंतिम शासक सुशर्मा थे। जिसकी हत्या उसके मंत्री शिमुक (आंध्र राजा) ने 30 ई.पू. में कर दी और इसके स्थान पर सातवाहन वंश की स्थापना कर दी।

सातवाहन वंश (प्रतिष्ठान) [30 BC-250 AD]

- इस वंश के संस्थापक **सिमुक** थे। जिसकी राजधानी **तगर** थी।
- प्रारम्भ में यह वंश महाराष्ट्र के क्षेत्र में था, किन्तु शक राजाओं ने इन्हें महाराष्ट्र छोड़ने पर विवश कर दिया।
- सातवाहन वंश को आंध्रप्रदेश में स्थानान्तरित होना पड़ा। जिस कारण पुराण में इन्हें आंध्र सातवाहन भी कहते हैं।
- सातवाहन की राजधानी प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र) थी जो गोदावरी नदी के तट पर स्थित था।
- सातवाहनों की राजकीय भाषा प्राकृत तथा लिपि ब्राह्मी थी।
- सातवाहन वंश किसी न किसी रूप में 3 शताब्दियों तक बने रहें। जो प्राचीन भारत में किसी एक वंश का सर्वाधिक कार्यकाल है।
- शातकर्णी-I सातवाहन वंश का पहला शासक था। जिसकी जानकारी नानाघाट अभिलेख (पूणे) से मिलती है। जो उसकी पत्नी नैनिका द्वारा बनवाया गया था।
- शातकर्णी प्रथम ने दक्षिणापथपति तथा अप्रतिहत् चक्र की उपाधि धारण किया।
- शातकर्णी प्रथम शासक का नाम सांची स्तूप के प्रवेश द्वार पर अंकित है।
- शातकर्णी प्रथम द्वारा दो अश्वमेघ यज्ञ और एक-राजसूय यज्ञ करवाया गया था।
- सातवाहन वंश का सबसे योग्य शासक **हाल** था।
- हाल ने प्राकृत भाषा में गाथासप्तशती की रचना किया था।
- इस वंश का सबसे प्रतापी शासक गौमती पुत्र शातकर्णी था। इसके समय नासिक के शक शासक नहपान ने आक्रमण कर दिया, किन्तु गौतमीपुत्र शातकर्णी ने उसे पराजित कर दिया।
- इसकी जानकारी महाराष्ट्र के नासिक जोगलथंबी से मिले सिक्कों से मिलती है। जिसके एक ओर गौतमी पुत्र शातकर्णी एवं दूसरी ओर नहपान का नाम और चित्र अंकित है।
- जिससे पता चलता है कि गौतमीपुत्र शातकर्णी ने शक शासक नहपान को हराया था।
- गौतमीपुत्र शातकर्णी ने बौद्ध संघ को अजकालकीय तथा कार्ले के भिक्षु संघ को कर्जक नामक ग्राम दान में दिया।
- गौतमीपुत्र शातकर्णी ने सातवाहन वंश की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः लौटाया।
- इस वंश का अगला शासक वशिष्ठ पुत्र पुल्लुमावी था।
- इसके समय पुनः उज्जैन के शक ने आक्रमण किया। इस बार शक वंश की ओर से आक्रमण का नेतृत्व रूद्रदामन कर रहा था।
- रूद्रदामन ने वशिष्ठ पुत्र पुल्लुमावी को पराजित कर दिया, किन्तु दोनों के बीच वैवाहिक संबंध स्थापित हो गए।
- इन्होंने आंध्रप्रदेश पर विजय प्राप्त कर प्रथम आंध्र सम्राट की उपाधि धारण किया।
- पुल्लुमावी ने अमरावती स्थित बौद्ध स्तूप का किलाबंदी करवाया।
- इस वंश का अंतिम शासक यज्ञश्री शातकर्णी था। इनके सिक्के पर जहाज का चित्र अंकित था।
- सातवाहन वंश ने उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सेतु का काम किया।
- ब्राह्मणों को सबसे पहले भू-दान सातवाहनों ने देना प्रारंभ किया, किन्तु सर्वाधिक भूदान गुप्त शासकों ने दिया।
- वेतन के बदले भूमि देने की सामंति व्यवस्था सातवाहन ने प्रारंभ किया, किन्तु सर्वाधिक प्रयोग गुप्त राजाओं ने किया।
- इस वंश के समय गांव के प्रधान को गौल्मिक कहा जाता था।
- इस वंश में दक्कन के क्षेत्र में कपास फसल उगाया जाता था।
- सातवाहन समाज मातृसतात्मक था।
- यहाँ नाम के पहले माता का नाम लिखा जाता था, किन्तु राजा पुरूष ही होता था।
- इस समय सीसा (Pb) के सिक्का का प्रयोग होता था।
- चाँदी के सिक्के को काषापर्ण तथा सोने के सिक्के को सुवर्ण कहते थे।
- सातवाहन साम्राज्य के भूमि गोदावरी नदी घाटी में थी, जिस कारण यह अत्यधिक उपजाऊ थी।
- ऐसा कहा जाता है कि सातवाहन काल की भूमि उस समय के सबसे उपजाऊ भूमि थी।

❐❐❐

10. मौर्योतर काल (Post Mauryan Period)

- मौर्यकाल के पतन के बाद मगध छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया, और कोई भी योग्य शासक नहीं रहा। जिसके कारण विदेशी आक्रमणकारियों को भारत एक अवसर की तरह दिखने लगा।
- मौर्योतर काल के बाद भारत पर 4 विदेशी आक्रमण हुए। जो निम्नलिखित हैं–

  I – Indo Greek (हिन्द यवन)

  S – शक् (सीथियन)

  P – पहलव (पार्थियन)

  K – कुषाण

Indo Greek (हिन्द यूनानी)

- इनका क्षेत्र हिन्दकुश पर्वत के समीप का बैक्ट्रिया प्रांत था। अत: इन्हें बैक्टेरियन शासक भी कहते हैं।
- हिन्द यूनानी भारत में दो चरण में आए थे–

➢ **प्रथम चरण**

- डेमोट्रियस ने लगभग 183 ई.पू. में पश्चिमयोत्तर भारत पर आक्रमण करते हुए, पंजाब एवं सिन्ध प्रांतों को जीत लिया और अपने जीते गये क्षेत्र की राजधानी शाकल (स्याल कोट) को बनाया और 'डेमोट्रियस वंश' की स्थापना किया।
- डेमोट्रियस ने शुंग राजा, पुष्यमित्र शुंग पर आक्रमण किया किन्तु पराजित हो गया।
- अगला शासक मिनाण्डर बना। इसने भी शुंग राजा पुष्यमित्र शुंग पर आक्रमण किया किन्तु पराजित हो गया।
- इसे (मिनाण्डर) बौद्ध-भिक्षुक नागसेन ने बौद्ध धर्म की शिक्षा दी। यह बौद्ध धर्म अपनाने वाला पहला विदेशी था।
- नागसेन एवं मिनाण्डर (मिलिन्द) के वार्तालाप की चर्चा नागसेन की पुस्तक मिलिन्द पन्हों में है।
- इनमें मिनाण्डर प्रश्न पुछते हैं और नागसेन उसके उत्तर देते है।
- सर्वप्रथम मिनाण्डर ने सोने के सिक्के जारी किये थे।
- मिनाण्डर का सर्वाधिक सिक्का गुजरात के भड़ौच नामक स्थान से मिला है। जो एक बन्दरगाह स्थल था।
- मिनाण्डर के काल में मूर्ति निर्माण के क्षेत्र में सर्वाधिक विकास हुआ।
- हिन्दयवन के अंतिम शासक हेलियोक्लीच थे।

➢ **''द्वितीय चरण''**

- इसमें युक्रेटाइडिस ने तक्षशिला में युक्रेटाइडिस वंश की स्थापना की।
- इस वंश के शासक आन्तीआल ने अपना राजदूत हेलियोडोटस को शुंग राजा भागव्रत के दरबार में मित्रवत् संबंध स्थापित करने के लिए भेजा।
- हेलियोडोटस भागवत धर्म (विष्णु भगवान) से प्रभावित होकर इस धर्म को अपना लिया और इस धर्म के सम्मान में विदिशा (बेसनगर) में गरूडध्वज अभिलेख बनवाया।
- यह किसी राजदूत का एक मात्र व्यक्तिगत अभिलेख है।
- यूक्रेटाइडिस वंश के अंतिम शासक हर्मियस थे।

हिन्दू यूनानी की विशेषता

- ये यवन से आकर भारत में बस गए अत: इन्हें हिन्द यूनानी कहते हैं।
- इन्हें काली मिर्च बहुत ही पसंद थी। अत: काली मिर्च को यवन प्रिय कहा गया।
- भारत में पहली बार चित्रयुक्त एवं लेखयुक्त सोने के सिक्के यूनानियों ने चलाया। जिसे ड्रम कहा जाता था। यह खरोष्टी भाषा में लिखा गया है।
- यूनानियों ने भारत में खगोल, ज्योतिष, गणित तथा समय का गणना प्रारम्भ किया।
- भारतीय नाटक का विकास यूनानियों के द्वारा हुआ है। भारतीय नाटक में पर्दा के लिए यूनानियों के द्वारा यवनिका शब्द का प्रयोग किया गया।
- इन्डोग्रिक शासन में मुर्त्ति निर्माण के क्षेत्र में एक नयी शैली गंधार शैली का विकास हुआ और इसी शैली में निर्मित प्रथम मुर्त्ति महात्मा बुद्ध की बनाई गयी।

'शक वंश'/सिथियन वंश (90BC)

- मौर्योत्तर काल में भारत पर आक्रमण करने वाला दूसरा आक्रमणकारी शक या सिथियन थे।
- ये बेलन-दर्रा पार करके भारत आये थे।
- शक् मध्य एशिया के रहने वाले थे।
- इन्हें युची वंश (काबिला) वालों ने मध्य एशिया से भगा दिया था।
- शक् राजाओं को क्षत्रप कहा जाता था।
- शकों के शासन व्यवस्था क्षत्रप शासक व्यवस्था थे।
- शकों ने भारत में उत्तर एवं पश्चिम दिशा में अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

➢ **ये भारत में आकर 5 जगहों में बसे थे–**
(i) कंधार (अफगानिस्तान)
(ii) तक्षशीला (पाकिस्तान)
(iii) मथूरा (UP)
(iv) उज्जैन (MP)
(v) नासिक (महाराष्ट्र)

- तक्षशिला में शक वंश की स्थापना मेउस के द्वारा किया गया था।
- मथुरा में शक वंश की स्थापना राजुल के द्वारा किया गया था।
- उज्जैन में शक वंश की स्थापना चेस्टक या यशोमति के द्वारा किया गया था।
- नासिक में शक वंश की स्थापना भूमक के द्वारा किया गया था।
- मथुरा के शक शासक राजुल को मालवा के शासक ने 57BC में पराजित कर दिया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण कर लिया। इस उपलक्ष्य में उसने 57 ई.पू. विक्रम संवत् नामक Calendar चलाया।
- भारतीय संविधान का यह मूल Calendar था, किन्तु 1957 में शक् संवत् को अपना लिया गया।
- नासिक का शक् शासक नहपान ने सातवाहन शासक गौतमी पुत्र शातकर्णी पर आक्रमण किया, किन्तु पराजित हो गया।
- इसकी जानकारी नासिक के जोगल थंबी से मिले सिक्कों से मिलती है।
- इन सिक्को पर एक तरफ नहपान की आकृति तथा दूसरी तरफ गौतमी पुत्र शातकर्णी की थी।
- सबसे प्रतापी शक् शासक उज्जैन का रूद्रदामन था।
- रूद्रदामन ने सातवाहन शासक वशिष्टि पुत्र पुल्लुमावी को पराजित कर दिया।
- रूद्रदामन का गुजरात के सौराष्ट्र प्रांत में गिरनार पहाड़ी पर जूनागढ़ अभिलेख मिला है।
- यह संस्कृत भाषा में लिखा भारत का पहला अभिलेख है। इस अभिलेख से यह जानकारी मिलती है कि चंद्रगुप्त मौर्य ने सरकारी खर्च पर गुजरात के सौराष्ट्र में सुदर्शन झील बनवाया था।
- यह अभिलेख चन्द्रगुप्त मौर्य के पश्चिम में विस्तार की जानकारी देता है।
- रूद्रदामन ने सुदर्शन झील का पुननिर्माण (जिर्णोधार) अपने अधिकारी शुवीशाख द्वारा करवाया।
- गुप्त शासक सकंदगुप्त ने भी इस झील का पुनर्निर्माण करवाया।
- अंतिम शक् शासक रूद्रसिंह-III थे।
- गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों का सर्वनाश कर दिया और इस उपलक्ष्य में विक्रमादित्य की उपाधि धारण किया। और चांदी के सिक्के चलाए। इस सिक्के को रूपक कहा जाता था।
- शक् शासकों ने 78 ई. में प्रारम्भ किए गए कनिष्क के Calendar का इतना अधिक प्रयोग किया कि इसे शक् संवत कहते हैं।

ग्रेगोरियन कैलेंडर

- यह सूर्य पर अधारित है।
- यह ईसा के जन्म से प्रारम्भ होता है।
- इसका प्रयोग सर्वाधिक होता है।

➢ **विक्रम संवत्–** इसे मालवा शासक विक्रमादित्य-IV ने 57 ई. पू. प्रारम्भ किया था।

- यह ग्रेगोरियन Calendar से 57 वर्ष आगे है अर्थात् विक्रम संवत में तिथी ज्ञात करने के लिए ग्रेगोरियन Calendar में 57 जोड़ दिया जाता है।
- इसी कारण संविधान लागू की तिथी 1949 को विक्रम संवत् में (1949 + 57) = 2006 कहता है।

➢ **शक् संवत**

- इसे कनिष्क ने 78 ई. में अपने राज्याभिषेक के समय प्रारम्भ किया था।
- यह ग्रेगोरियन Calendar से 78 ई. बाद आया। अत: यह ग्रेगोरियन Calendar से 78 वर्ष पिछे है।
- 22 मार्च, 1957 ई. से राष्ट्रीय पंचाग के रूप में शक् संवत को अपनाया गया था।
- शक् संवत में तिथी ज्ञात करने के लिए ग्रेगोरियन Calendar में 78 वर्ष घटा दिया जाता है।
- शक् संवत एवं विक्रम संवत के बीच 135 वर्ष के अंतर है।
- विक्रम संवत्, शक् संवत्, हिजरी Calendar (मुस्लिम Calendar) चन्द्रमा पर आधारित है। अत: इनका त्योहार भी हर एक वर्ष 11 दिन पिछे हो जाता है। किन्तु 3 साल बाद शक् संवत में एक अतिरिक्त महीना जोड़ दिया जाता है।

पहलव/पार्थीयन वंश

- मौर्योत्तर काल के बाद भारत पर आक्रमण करने वाला तीसरा वंश पार्थीयन या पहलव थे।
- ये ईरान/फारस/पर्सिया के थे, जिस कारण इन्हें पार्शियन कहा जाता है।
- इन्होंने अपनी राजधानी पुरूषपुर (पेशावर) को बनाया।
- इस वंश के संस्थापक मिथ्रेडेटस थे।
- इस वंश के सबसे योग्य शासक गोन्दोफर्निस थे जिनका उल्लेख पाकिस्तान के ''तख्त-ए-बही'' अभिलेख में मिला है। यह खरोष्टि लिपी में है। इनके समय में पूर्तगाल का इसाई धर्म प्रचारक 'सेन्ट थामस' भारत आया था। यह भारत आने वाला पहला ईसाई धर्म प्रचारक था।

कुषाण वंश

- मौर्योत्तर काल में भारत में आक्रमण करने वाला अंतिम शासक कुषाण वंश थे।

- ये मध्य एशिया (चीन तुर्कीस्तान) के निवासी थे।
- मध्य एशिया में यूचि कविला 5 भागों में बंटा था। इसी 5 में से 1 भाग कुषाण था।
- कुषाण वंश का क्षेत्र मध्य एशिया के आनुदरिया नदी से लेकर गंगा के क्षेत्र तक था।
- कुषाण वंश के संस्थापक 'कुजुलकडफिसस' थे।
- इन्होंने तांबे का सिक्का चलाया था।
- ये शैव धर्म को मानते थे। जिसका प्रमाण उनके सिक्के से मिले हैं। इन सिक्को पर एक तरफ कुजुलकडफिसस तथा दूसरी तरफ नंदी बैल की आकृति थी।
- अगला शासक विम-कडफिसस बना, जो इस वंश का वास्तविक संस्थापक था। यह शैव धर्म को मानता था।
- इन्होंने महेशवर की उपाधी धारण किया।
- इनके सिक्के पर एक तरफ खरोष्टी लीपि में इनका नाम लिखा हुआ था तथा दूसरी तरफ शिव पार्वती एवं त्रिशुल की आकृति बनी हुई थी।
- कुषाण वंश का सबसे प्रतापी शासक ''कनिष्क'' था। इसने 78 ई. में अपना राज्याभिषेक करवाया। और इस अवसर पर शक् संवत् प्रारम्भ किया।
- इसने अपनी राजनीतिक राजधानी पेशावर को बनाया जबकि सांस्कृतिक राजधानी तक्षशिला को बनाया बाद में सांस्कृतिक राजधानी मथुरा (मंधूसा) को बनाया।
- कनिष्क ने पाटलीपुत्र पर आक्रमण किया और महात्मा बुद्ध का ''भिक्षा-पात्र'' तथा यहाँ के दार्शनिक अश्व-घोष को अपने साथ लेता गया। इसी अश्वघोष को कनिष्क ने अपने राज कवि का दर्जा दिया।
- कनिष्क बौद्ध विद्वान पार्श्व के कहने पर कश्मीर के कुंडल वन में चतुर्थ बौद्ध सम्मेलन का आयोजन प्रथम सदी में करवाया था। इस बौद्ध सम्मेलन में अध्यक्ष के साथ साथ उपाध्यक्ष की भी व्यवस्था की गई। अध्यक्ष पद पर वशुमित्र तथा उपाध्यक्ष पद पर अश्वघोष को बैठाया गया।

➢ **इस सम्मेलन में बौद्ध धर्म दो शाखा में बंट गया है–**

1. हीनयान एवं
2. महायान।

- कनिष्क महायान शाखा को मानता था।
- महायान बौद्ध धर्म की एक सरल शाखा थी जिसमें भिक्षुक सोने के आभूषण धारण कर सकते थे तथा माँस खा सकते थे।
- कनिष्क के प्रयास से ही बौद्ध धर्म की महायान शाखा का प्रचार मध्य एशिया और चीन में हुआ।
- कनिष्क के दरबार में पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष नागार्जुन तथा चरक नामक विद्वान रहते थे।
- अश्वघोष ने बुद्ध-चरित्र लिखा।
- चरक ने चरक-संहिता लिखा। ये वैद्य (डॉक्टर) थे।
- नागार्जुन ने माध्यमिक सूत्र में सापेक्षता के सिद्धांत की चर्चा की है। अत: इन्हें भारत का आइंस्टिन कहते हैं।
- नागार्जुन बौद्ध धर्म के 'शून्य वाद' को जानते थे।
- वसुमित्र नामक विद्वान ने महाविभाष सूत्र के रचना किया। जिसे बौद्ध धर्म का विश्वकोष कहा जाता है।
- सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कनिष्क के शासन काल में जारी किए गए। इन्हें सोना की प्राप्ती पाकिस्तान में हिन्दूकुश पर्वत के बीच अलताई पहाड़ियों से होता था।
- कनिष्क के समय तांबे के सिक्के को काकिणी कहा जाता था।
- मथुरा से कनिष्क के सिक्को का एक ढ़ेर मिला है। जिसमें कनिष्क को एक सैनिक वेश-भूषा में दिखाया गया है।
- कनिष्क के समय स्थल तथा समुद्र दोनों मार्ग से व्यापार होते थे।
- कनिष्क के समय उत्तर भारत में बंगाल का ताम्रलीप बंदरगाह तथा दक्षिण भारत में महाराष्ट्र का सोपारा एवं कल्याण बंदरगाह प्रमुख थे।
- अज्ञात की रचना ''पेरिप्लस of the एरिथ्रीयन सी'' (POAS) से यह जानकारी मिलती है कि कनिष्क का सर्वाधिक व्यापार रोम से होता था।
- कनिष्क के समय ही पहली बार नासपाती की खेती प्रारम्भ हुई। इसी के समय अरब नाविक हिप्पालस ने मानसून की खोज की। मानसून अरबी भाषा का शब्द मौसीम से उत्पन्न हुआ जिसका अर्थ होता है मौसम के अनुरूप पवन की दिशा।
- कनिष्क के शासन काल में मूर्ति निर्माण कला में काफी विकास हुआ।
- कनिष्क ने अपनी राजधानी पुरूषपुर के समीप एक विशाल संघारामबिहार का निर्माण करवाया था।
- कनिष्क को द्वितीय अशोक कहा जाता है।
- 105 ई. (लगभग) में कनिष्क की मृत्यु हो गई।
- इसके उत्तराधिकारी योग्य नहीं थे, जिस कारण इसके छोटे-छोटे सामंत अलग होने लगे।
- इस वंश के अंतिम शासक के रूप में वासुदेव की चर्चा मिलती है।
- इसी वंश के सामंतों ने आगे चलकर गुप्त वंश की स्थापना कर दी।

रेशम मार्ग (Silk Rout)

- यह चीन के रेशम व्यापार को यूरोप, फारस तथा मध्य एशिया से जोड़ता था।
- इस मार्ग का दक्षिणी भाग हिन्द महासागर से गुजरता था। जबकि उत्तरी भाग कश्मीर तथा हिन्दुकुश पर्वत को पार करके गुजरता था।
- कनिष्क ने रेशम मार्ग पर अधिकार कर लिया था। यह मार्ग चीन के क्षेत्राधिकार में आता था।
- कौशेय शब्द का प्रयोग रेशम के लिए किया गया है।
- रेशम मार्ग आम तौर पर वह स्थलीय मार्ग कहलाता है जिसे चीन के हान राजवंश के महान यात्री यांगछयान ने खोला था। जो हान वंश की राजधानी छागआन से पश्चिम में रोम तक जाता था।
- रेशम मार्ग के होने वाले व्यापार पर कनिष्क कर (Tax) लेता था। जो उसके अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा स्रोत था।

❑❑❑